- द्वितीय अध्याय -

'पत्तों की बिरादरी' की कथावस्तु का अनुशीलन

द्वितीय अध्याय

" पत्तों की बिरादरी" की कथावस्तु का अनुशीलन।"

गदय में रचित कथा साहित्य का महत्वपूर्ण रूप उपन्यास आज साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। किसी उपन्यास की मूल कहानी को या विभिन्न घटनाओं, घात-प्रतिघातों से मिलकर उपन्यास की जो कहानी बनती है उसे उपन्यास की कथावस्तु कहा जाता है। डॉ. गुलाबराय के अनुसार " उपन्यास कार्यकारण शृंखला में बंधा हुआ वह गदय कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार और पेचीदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधीत्व करनेवाले व्यक्तियों से सम्बन्धित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।"[1] कथावस्तु की महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि उपन्यास की सारी घटनाएँ शृंखलाबध्द होती हैं। यदि उपन्यास में से एक घटना को भी पृथक या अलग किया जाय तो मूल कथा विशृंखलित हो जायेगी उसका क्रम टूट जायेगा। उपन्यास पढ़ते समय पाठक को अपना या अपने आस-पास का चित्र अंकित होता है। कथानक वह वस्तु होती है, जिसपर उपन्यास की इमारत खड़ी होती है। उपन्यास का समग्र रूप कथानक ढाँचे पर ही विकसित होता है। कथानक के संदर्भ में डा. भगीरथ मिश्र का मत दृष्टव्य है - " कथानक के समस्त अंगों का सुंदर संगठन घटनाओं का समुचित विन्यास उपन्यास को सुंदर बनाने के लिए आवश्यक होता है।"[2]

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास के छह तत्व माने हैं। वे हैं - कथावस्तु, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल और वातावरण, भाषाशैली तथा उद्देश्य। इन तत्वों में से कथावस्तु, चरित्र-चित्रण और उद्देश्य अत्यावश्यक और

महत्वपूर्ण तत्व हैं। कथावस्तु को उपन्यास का प्राणतत्व माना जाता है। कथानक के दो प्रकार मिलते हैं --

१) मुख्यकथा और २) प्रासंगिक कथा ।

१) मुख्य कथा -

उपन्यास की प्रधान या मुख्य कथा को अधिकारीक कथा कहा जाता है। उपन्यास के प्रमुख पात्र को साथ लेकर चलनेवाली कथा को मुख्यकथा कहा जाता है। किसी भी उपन्यास में एक से अधिक मुख्य कथाएँ नहीं हो सकती।

२) प्रासंगिक कथा -

उपन्यास के प्रमुख पात्र के सहयोगी पात्रों से संबंधित कथा अथवा कथाएँ प्रासंगिक कथा के अन्तर्गत आती हैं। किसी भी उपन्यास में प्रासंगिक कथा एक या एक से अधिक हो सकती है। उपन्यास के मध्यभाग में बनने और समाप्त होनेवाली कथाओं को प्रासंगिक कथा की संज्ञा दी जाती है।

* विवेच्य उपन्यास की कथावस्तु -

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु को प्रारंभ करने से पहले कुछ प्रारंभिक घटनाओं पर नजर डालना मैं उचित समझता हूँ। -

अंग्रेज जानता था कि हिन्दू-मुस्लिम एकता उनके दीर्घकाल शासक बने रहने में बाधा है। अतएवं उसने हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष को बढ़ावा

देने की हर संभव कूटनीति अपनाई। उसने मुसलमानों के साथ अपनी मित्रता जतायी और हिन्दुओं के खिलाप उन्हें उकसाया। परिणामत: २० वी शताब्दी में हिन्दू-मुसलमानों का संघर्ष दिनों-दिन बढ़ता गया। अंग्रेजों के भड़काने से मुसलमानों को लगने लगा कि राष्ट्रीय कॉंग्रेस सिर्फ हिन्दुओं की है, हिन्दू का कल्याण ही उसका लक्ष्य है। अत: दुर्भाग्यवश सन १९०९ को "मुस्लिम लिग" की स्थापना की गई जिसमें मुस्लिमों के हित की रक्षा का लक्ष्य प्रधान था। आगे चलकर हिन्दू-मुसलमानों का भयंकर सांप्रदायिक दंगा हुआ जो कि अंग्रेजी की कूट-नीती का ही परिणाम था। अनेक निष्पाप लोगों का कत्ल हुआ। १५ अगस्त, १९४७ को आजादी मिली किन्तु मुस्लिम लिग की मॉंग के कारण देश का विभाजन हुआ। मुस्लिमों के लिए पाकिस्तान स्वंतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया। लेकिन जातीय दंगे,आगजनी, बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि घटनाओं ने जोर पकड़ा। इसी स्थिति में अकाल जैसी भयावह नैसर्गिक आपत्ति का लोगों को सामना करना पड़ा। उक्त आपत्तियों के कारण संघर्षरत जीवन का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने किया है।

श्री मणि मधुकरजी का नाम हिन्दी साहित्य क्षेत्र में बहुचर्चित है। उनके साहित्य पर राजस्थानी परिवेश तथा जन-जीवन की गहरी छाप रही है। " राजस्थान के पश्चिमी छोर पर धूल-धूसरित लोगों की अत्यन्त सजीव छवियां इस उपन्यास में मुखरित हुई हैं। एक अकाल-पीड़ित सहायता-शिबिर में रोजी-रोटी कमाते, उजड़ते-बसते लोगों का हुजूम और इस हुजूम के बहते पसीने पर दिन-रात फलते-फूलते चन्द अवसर-वादी लोग। गरीबों के शोषण-उत्पीड़न का अनवरत और पेचीदा सिलसिला। इस सिलसिले में सरकारी अधिकारी हैं, राजनेता हैं, तथा कथित समाजसेविका एक "बाई" है, सेठ साहुकार हैं - यानी वह पूरा

निजाम, जो श्रम के शोषण पर आधारित पूँजीवादी व्यवस्था का पक्षधर है। पर धीरे-धीरे जागती और इस स्थिति को झामझाती हुई श्रम-शक्ति के तेवर बदलते हैं। मेहनत संगठित होती है और होता है, शोषक शक्तियों का कारगर प्रतिरोध।"[3]

प्रस्तुत उपन्यास की कथा को चौदह दृश्यों में विभाजित किया है। इन दृश्यों के माध्यम से क्रमशः उपन्यास के आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा और अंत को अंकित किया है।

* आरंभ -

उपन्यास का प्रारंभ वातावरण निर्मिति से है। तम्बुओं के तिरपाल फड़फड़ाती हुई हवा बेचैनी से घुमेरी लगा रही थी। नायक शुबो भारत सरकार ने लगाये हुए अकाल-पीड़ित सहायता शिबिर की ओर अपने माँ-बाप के साथ रोजी-रोटी की तलाश में अविरत चल रहा था कि अचानक - " अपसगुण और आतंक की डोर तानती हुई कलमुँही तान, अपने अन्तिम सिरे पर चीख की तरह चिरती हुई ..... चिर कर दूर-दूर रेंग जाती हुई।"[4] इसी आवाज से चीख चुप हो जाती है। शुबो बड़े-बड़े डग भरता हुआ कैंप के पास आ पहुँचता है। कैंप में तीन तम्बू हैं - एक पुष्पाबाई का, दूसरा इग्यारसीलाल का और तीसरा ठेकेदार बछराज का।

हिन्दुस्थान का भारत-पाक के रूप में बँटवारा हो चुका है। बँटवारे के कारण साम्प्रदायिक दंगे, आगजनी के बवंडर उठ रहे हैं। आम जनता इसी दंगों, आगजनी की शिकार बनती जा रही हैं। इसी परिस्थिति में पिसती जनता को अकाल जैसी भयावह नैसर्गिक आपत्ति का

सामना करना पड़ रहा है। लोग रोजी-रोटी की तलाश में जगह-जगह भटक रहे हैं। लोगों को खाने के लिए न रोटी मिल रही है और न पीने के लिए पानी। भारत सरकार ने अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए शिबिर खडे किए हैं। कैंप लोगों से खचाखच भरे हुए हैं। शुबो कैंप में भरती होना चाहता है। लेकिन वह देर से आनेवाले में था। इसलिए उसे प्रवेश नहीं मिल रहा है। शुबो वही द्वार पर डटकर खड़ा रहता है। ठेकेदार बछराज उम्मरकोट का रहनेवाला है और शुबो उम्मरकोट के पास फतियाँवाली ढाणी का। शुबो बछराज के गाँव के नजदीक रहनेवाला होने के कारण उसे कैंप में प्रवेश मिलता है। जब शुबो को बताया जाता है तुम पखेस्तानवाले हो ? तो शुबो दयनीयता से कहता है- " भूखे आदमी का कोई मुलक होता है क्या, जहाँ दो टूक मिलेंगे, चला जाये।"[५] शुबो एक आम हिन्दुस्थानी है। उसे भारत-पाक बँटवारा मंजूर नहीं। वह तो सिर्फ अपने पापी पेट की आग बुझाना चाहता है। यहाँपर लेखक ने भूखे आदमी की दयनीय अवस्था का चित्रण किया है। सहायता शिबिर में कूल-मिलाकर नौ-दस कैंप थे। वहाँपर जैसलमेर की सड़क का काम चल रहा था। मजदूरी के रूप में लोगों को अनाज और पानी मिलता था।

शुबो आज कुछ उदास था। रात में नींद नहीं आ रही थी। वह अपनी पिछली जिंदगी में खो जाता है। उसे अपनी उजड़ी हुई फतियाँवाली बस्ती याद आती है। ढाणी छोड़ते समय वे तीन जन थें। माँ, बाऊ और खुद शुबो। शुबो अपने दीन-जर्जर माँ-बाप को लेकर कैंप में भरती होने आ रहा था। रास्ते में भूख के कारण माँ मर जाती है और आगे चलकर बाऊ उसके पीठ पर ही प्यास की वजह से दम तोड़ देते हैं। उनका वह अन्त्य-संस्कार तक नहीं कर सका। और तो और अपनी माँ की अन्तिम इच्छा तक पूरी न कर सका। उसकी अन्तिम इच्छा भी तो क्या थी ? - " मरने से पहले ..... बस, एक बार ताजा सिंकी हुई रोटी का

सुवाद चख लेना चाहती हूँ - यहीं ..... यहीं एक आखरी इंच्छया रह गयी है अब तो।"[6] यहाँ आकर उसका सपना टूट जाता है।

शुबो को पहलीबार एहसास होता है कि उसके पास कोई नहीं है जो उसकी विवशता को अपनी विवशता में लपेटकर ढाढ़स बँधा सके। इतने में उसकी सुवटी से मुलाकात हो जाती है। सुवटी मनोविकृत पात्र है। वह शुबो के साथ अपने सम्बन्ध प्रस्थापित करना चाहती है। लेकिन शुबो उसके इस मत का इन्कार कर देता है। सुवटी के इग्यारसीलाल के साथ नाजायज सम्बन्ध थे। इग्यारसीलाल बूढ़ा होते हुए भी वह कैंप की हरेक स्त्री के साथ अपनी कामेच्छा को बूझाना चाहता है। लेखक ने इग्यारसीलाल के जरिए मानवीय पशुवृत्ति को चित्रित किया है।

शुबो का सपना टूट जाता है - " हवा आयेगी और ये पत्ते फिर आगे उड़ जायेंगे। ऋतुओं की मार से पेड़ उजड़ने लगता है तो पत्ते सूख-सूखकर गिरने और बिखरने लगते हैं। अपने गाँव-घर को छोड़कर दुख-दैन्य के बोझा को ढोते हुऐ, वे पत्ते ..... जाने कहाँ-कहाँ तक रेलों में बहते-उड़ते चले जाते हैं। ..... यहीं है पत्तों की अपनी बिरादरी। जब हरे थे, तब साथ। और अब सूख गये है ..... अपने गाछ, अपनी जड़ों अपनी शाखाओं से बिछुड़ गये हैं तो भी साथ। यह क्या चीज है जो इनको इस तरह बाँधे हुए रखती है।"[7]

उक्त अवतरण से ध्वनित होता है कि लेखक ने अपनी प्रभावशाली प्रतीकात्मक शैली में अकाल से पीड़ित लोगों का बड़ी सूझ-बुझ के साथ चित्रण किया है। यहाँ से कथा विकास की ओर अग्रसर होती है।

* विकास -

प्रस्तुत उपन्यास में बहुत से पात्रों का चयन किया है। इनमें है - इग्यारसीलाल, बछराज, हरलो, रावता, जैतपालसिंह, बदरू-मियाँ, जमाल, सिराम, जुगनी, पुष्पाबाई, सुवटी, अचली, गोदारी, जानकी काकी, फुलकी, बीनणी आदि पात्रों का समावेश किया जा सकता है।

पूरी कथा शुबो के इर्दगीर्द मँडराती है। एक दिन काम करते समय सुवटी, फुलकी और जानकी काकी तथा शुबो गप्पें लड़ा रहें हैं। तभी इग्यारसीलाल वहाँ आकर शुबो के सर पर डण्डा पटक देता है। शुबो वहाँ तनकर खड़ा रहता है। जब जानकी काकी के कूल्हों पर इग्यारसीलाल ने दो बार डण्डे सो कोंचा तो शुबो आवेशित हो जाता है। और लपककर इग्यारसीलाल के हाथ से डण्डा छीन लेता है। इग्यारसीलाल के गाली देनेपर शुबो कहता है - " तुम्हारे बुढ़ापे का लिहाज कर तुम्हें छोड़ रहा हूँ, आज। ..... लेकिन आइन्दा अगर किसी औरत की बेइज्जती की तो गरदन तोड़कर रख दूँगा, समझे।"[८] यहाँ से कथा विकसित होने लगती है। इसी बहादूरी की वजह से तथा बछराज की सिफारिश से शुबो को कैंप की पहरेदारी का काम सौंपा जाता है। पहरेदारी का काम करना उस कैंप में ऊँचे स्तर का माना जाता है। बदरू मियाँ शुबो को राजनेता जैतपालसिंघ के बारे में जानकारी देता है। पुष्पाबाई और जैतपालसिंघ के नाजायज सम्बन्ध हैं।

इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता सरकार के भेजे हुए ठेकेदार हैं। वे उम्मरकोटवालों को अकाल-पीड़ितों की सहायता शिबिर में स्थित भण्डार से अनाज चूराकर बेचते हैं। एक दिन शुबो खुद उन्हें

देखता है। शुबो को लगता है कि यह अनाज किसी अन्य गुदाम में पहुँचाया जा रहा है; मगर बदरू मियाँ द्वारा उसे ज्ञात होता है कि इग्यारसीलाल तथा पुष्पाबाई अनाज बेचकर आयी रकम से ऐयाशी करते हैं। जब उम्मरकोटवाले अनाज से भरे हुए बोरों को ऊँटपर लदवाकर ले जा रहे थे तो गडबड़ी में उन बोरों में से दो बोरें जमीन पर गिर जाते हैं। शुबो उन बोरों को एक गड्ढा खोदकर गाड़ देता है। अविरत परिश्रम के बावजूद भी उसके चेहरे पर ताजगी दिखाई देती थी। वह सुबह-सुबह आनंद-विभोर सा गा रहा था तब बिना वजह इग्यारसीलाल उससे झागड़ा करता है। इग्यारसीलाल शुबो के खिलाप पुष्पाबाई से कहता रहता है तब पुष्पाबाई शुबो को समझाती है - " बात यह है कि तुम जरा सावधानी से रहो। मैंने तो बछराज के कहनेपर तुम्हें यहाँ रख दिया है, लेकिन अमर राज में किसी ने शिकायत कर दी तो बुरा होगा। तूम दूसरे मूलक के हो।"[९] उक्त विधान से शुबो पुष्पाबाई पर बिगड़ जाता है। क्योंकि वह किसी मुलुक-उलुक को नहीं मानता। बदरू मियाँ शुबो को इग्यारसीलाल से बचके रहने की सलाह देता है।

शुबो आज कुछ उदास था। अकाल की डरावनी छायाओं से घिरा हुआ शुबो निरन्तर एक अबूझा जड़ता और कायरता के कीचड़ में धँसता चला जा रहा था। उम्मीद उससे बिछुड़ गयी थी। उसे लगता था अपने जी में जान नहीं है। ऐसी स्थिति में पुरानी यादें ताजा करते हुए शुबो हँसने लगता है। तब शुबो की हरलो डाकू से मुलाकत हो जाती है। बातों-बातों में दोनों में झागड़ा हो जाता है। शुबो उसे परास्त करता है। तब हरलो शुबो का अपनी टोली में शामील होने का प्रस्ताव रखता है। शुबो उसके प्रस्ताव का इन्कार कर देता है। शुबो और हरलो का झागड़ा इग्यारसीलाल दूर से देखता है। उसे ज्ञात होता है कि शुबो हमारे काम का आदमी है। तब इग्यारसीलाल शुबो से

बताता है - " तुम पुसपा बाई के जंजाल में मत पड़ जाना। मैं तुम्हें होस्यार कर देना ठीक समझाता हूँ। अपने मतलब के लिए वो लोगों को गाँठती रहती है, लेकिन बदले में देती कुछ नहीं।"[10] पुष्पाबाई - इग्या-रसीलाल ऊपरी तौर पर एक दिखाई देते हैं, मगर अंदर से हमेशा एक-दूसरे के खिलाफ रहते हैं।

सड़क का काम खत्म हो रहा था। बालू भड़भूँजे की तरह भभकती रहती थीं। वहाँ पर पानी की किल्लत महसूस हो रहीं थी। दस-दस मिल कहीं पानी का ठिकाना नहीं था। सरकार ने तालाब की योजना लेकर अपना एक आदमी भेजा, क्योंकि तालाब बनवाने पर उसमें दो-दो बरस पानी रह सकता है। उससे पानी का प्रश्न तो सुलझा जायेगा। पुष्पाबाई इस योजना का स्वीकार करती है। कैंपवालों को पता लगता है कि अन्य किसी कैंप का भण्डार हरलो की टोली ने लूट लिया है। एक आदमी उन्हें रोकने गया तो उसे फूस पर डालकर जिन्दा जला दिया। पुष्पाबाई कैंप की रखवाली के लिए उम्मरकोट के कुछ लोग बुलवाना चाहती है। मगर शुबो पुष्पाबाई पर गुस्सा करता है। उसके बाद पुष्पाबाई शुबो को अपने गुट में शामिल करने का लालच दिखाती है। मगर शुबो नहीं मानता। पुष्पाबाई शुबो से कहती है - " उम्मरकोट तुम्हारा मुलक है।", तो शुबो आवेशित होकर कहता है - " फालतू का लफड़ा खड़ा मत करो पुसपाबाई। किसी माँ के यार ने पखेस्तान बना दिया, किसी ने ईंदस्तान। सिरफिरे स्साले। उनके बनाने से होता क्या है ? मुझे तो उन्होंने नहीं बनाया ? तुम्हें भी नहीं। सो हमें मुलुकों में बाँटकर अलग करनेवाले वो घासियारे ..... कौन होते हैं ?"[11]

* संघर्ष -

भारत-पाकिस्तान बँटवारा शुबो को मंज़ूर नहीं है। वह इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई से धमकाता है - " एक बात कानों का मैल निकाल के सुन लो। इस बार, कम्फ का अनाज उम्मर-शुम्मरकोट गया तो कत्तल हो जायेगा।"[१२] यहाँ से कथा संघर्ष की ओर अग्रेसित होती है। जमाल-बीनणी को पुत्ररत्न प्राप्त होता है। कैंप में गूड़ और दाल बाँटकर आनंदोत्सव मनाया जा रहा है। उनके आनंद में ठेकेदार बछराज शामिल है।

बछराज बीमार है। उसकी बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती ही जाती है। वह नाममात्र ठेकेदार रह गया है। पूरे कैंप पर पुष्पाबाई की हुकूमत चलती रहती है। अकाल से त्रस्त लोग भूख के कारण रोजी-रोटी की तलाश में मारे-मारे भटक रहे हैं। कैंप में नई भरती बिल्कुल रोक दी है। पुष्पाबाई तालाब की योजना मिलने से खुश है। इसका फायदा शुबो रोज नये लोग भरती करवाकर लूटता है।

सुवटी शुबो से कहती है कि तुम हरलो से जा मिलो। तब शुबो को ज्ञात होता है कि सुवटी और हरलो के नाजायज तथा व्यावहारिक सम्बन्ध हैं। तब शुबो ताड़ लेता है कि सुवटी ही हरलो से कैंप में घटित घटनाओं को बताती है। और वह सुवटीपर इस बात को लेकर उकसाता है। सुवटी वहाँ से चली जाती है। उसी वक्त फाटक पर भरती के लिए दो स्त्रियाँ आती हैं। वे दानों माँ-बेटी हैं, अचली और जुगनी। उन्हें कैंप में जगह नहीं मिलती लेकिन इग्यारसीलाल उन्हें देखता है। उनमें से एक अठारह-उन्नीस की लड़की है। तब इग्यारसीलाल की काली नजर उसपर गढ़ जाती है, और उन्हें कैंप में प्रवेश दे देता है।

बाद में उनसे कहता है - " नेम कायदे से रहना होगा, यहाँ। मेरे कहने में चलोगी तो दोनों की सुखा से कट जायेगी।"[13] इग्यारसीलाल के माध्यम से लेखक ने अमानवीय पाशवी वृत्ति को चित्रित किया है। जुगनी को शुबो अच्छा लगता है। जब इग्यारसीलाल जुगनी को अपने तम्बू में बुलाता है तो शुबो आवेशित हो जाता है। जुगनी समझादार है, अत: वह शुबो से कहती है - " मैंने तुम्हारी तरह दुनिया का सामना नहीं किया है, शुबो। लेकिन - जानती हूँ कि जिन्दा रहने के लिए जिन्दगी को किस तरह रौंदना पड़ता है।"[14] शुबो कहता है - उन्होंने सिर्फ हमें पेट समझा लिया है। तब जुगनी शुबो से कहती है - " पेट के अलावा और भी बहुत कुछ है, हमारे पास। धड़, बाजू, दिमाग पाँव और इन सबको जोड़नेवाली ताकत। अजैदान कहता है।"[15] जुगनी शाबो तथा अन्य पात्र कवि अजैदान से प्रेरित हैं।

दिल्ली में राजनेता जैतपालसिंघ का खून हो जाता है। यह खबर सुनकर पुष्पाबाई आकाश-पाताल एक कर देती है। पुष्पाबाई कहती है - " वो नकसली-उकसली लोग थे। अच्छा हुआ। नेता बनके अकड़ता फिरता था मेरा जैतपालसिंघ। हकूमत सिर में बोलने लगी थी। मुझासे बोला अभी तुम कैंप में जाके रहो और कुछ कमाई-धमाई कर लो, फिर पोलिटिकिस करना। अरे, मुझे सब मालूम है, उसको कोई और मिल गयी थी। वहीं भोपालवालीं बेगम साईबा ..... रॉड़ होगी, और क्या ? उसी के खूखने में घुसा होगा। लेकिन ..... कर कुछ नहीं सकता था, मेरा जैतपालसिंग।"[16] यहाँपर लेखक ने राजनेताओं पर करारा व्यंग्य किया है। शुबो को लगता है पुष्पाबाई कैंप छोड़कर जायेगी, मगर ऐसा नहीं हुआ। वह वहीं पर अपना अड्डा जमाये बैठी रही।

इस काल में हम अझाद तो हो चूके थें, मगर नाममात्रा।

राजव्यवस्था में भ्रष्टाचार, अनाचार जारी था। गरीब जनता पीसती रहती हैं। स्त्रियों पर अन्याय-अत्याचार हो रहे हैं। और इसका उदाहरण है बदरू मियाँ का वक्तव्य - " हीरानन्द-खीरानन्द भी खाली हाथ थोड़े ही पट जायेगा। उकसी गाँठ नोटों से गरम करनी होगी। बिस्तर को भी गरमाई देनी पड़ेगी, लेकिन वह अब पुसपा बाई पर राजी नहीं होगा। किसी और ईश्तरी का बन्दोबस्त करना होगा। ..... वो सब पुसपा बाई यहीं से कर लेगी। जब तक खजाना भरा रहता है, नागिन उस पर कुंडली मार बैठी रहती है।"[१७]

सिराम शुबो का साथी है वह बावरी जाती का है। वह भी इग्यारसीलाल को ठिकाने लगाने की सोचता है। बछराज की तबियत बहुत खराब है। सुवटी हमेशा जुगनी को सताती रहती है तो सुवटी के खिलाप अचली शुबो के पास शिकायत करती है। एक दिन ठेकेदार बछराज और अचली आपस में बातचीत कर रहे थे, तब उनके वार्ता-लाप से शुबो को ज्ञात होता है कि अचली बछराज की पत्नी और जुगनी बेटी है। अचली सुंदर है, उसके बछराज के सिवा दीने नामक किसी गैरमर्द के साथ तथा सिपाही और इग्यारसीलाल के साथ शारिरीक सम्बन्ध हैं। लेकिन इतना कुछ होने के बावजूद भी वह एक आदर्श माता है। पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल तालाब में मिनख की बली देने की बात सोचते हैं।

बछराज जुगनी का पिता हैं मगर जुगनी को यह रिश्ता ज्ञात नहीं है। वह अचली से नफरत करती है। क्योंकि उसे अचली के अनके जनों के साथ जो सम्बन्ध थे वे मालूम है। शुबो अपने-आप को हमेशा कमजोर महसूस करता है, मगर जुगनी समझदार है। उसने शुबो को समझाने से तथा शुबो के प्रति अपना प्यार जताने से उसे एक अनोखा

अल्हाद महसूस होता है। जुगनी जिंदगी के बारे में कहती है - " जंग लोहे को खा जाता है, अभाव आदमी को फिर भी जो दु:ख झेलता है, जिन्दगी उसी को कुछ देती है।"[१८] उक्त वक्तव्य से प्रभावित शुबो जुगनी को उसका हाथ अपने हाथ में माँगता है। नायक को कायिका मिल जाती है।

सरकार को पता लगा है कि कैंप में पाकिस्तान के जासूस मौजूद हैं। तब जाँच-पड़ताल के लिए सरकार की ओर से कैंप में पुलिस आती है। पूरे कैंप में तनाव फैला हुआ है। हरलो तथा हरलो की टोली के लोग शुबो को पकड़ ले जाते हैं। कैंप में बछराज की मौत हो जाती है। अचली के रो पड़नेपर जुगनी उसे पूछती है क्यों रो रही हो, तब अचली अपनी बेटी से कहती है - यह तुम्हारे पिता हैं, तब पिता के प्यार की भूखी जुगनी रो पड़ती है।

शुबो को हरलो पकड़ ले जाता है। शुबो को हरलो पकड़कर क्या ले गया, पूरे कैंप में परिवर्तन ही आ गया। बछराज की मृत-देह को दहन देने के बजाय थानेदार, पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल शराब की बोतले ऊँडेल रहे हैं। लाश की परवा किसको पड़ी है। थानेदार अपनी भूतपूर्व गुलाबी यादें बता रहा है। बाद में इग्यारसीलाल ने जिन्न की बात छेड़ दी। थानेदार बहुत डरपोक आदमी है। वह कहता है - " डिउटी गयी भाड़ में। उसके लिए अपनी जान खातरे में डालूँगा क्या ?"[१९] यहाँपर लेखक ने पुलिस अफसरों की खिल्ली उड़ाई है। इसके साथ-साथ उन्होंने राजनेताओं पर भी करारा व्यंग्य किया है। पुलीस अफसर का पुष्पाबाई के लिए निम्न वक्तव्य द्रष्टव्य है - "..... हमसे मेल करके रहो। अभी तुम हमें हिस्सा दो, जब मिनिश्टर बन जाओगी तो हम तुम्हें बाक्कायदा हिस्सा देंगे। यह लेनदेन तो बना रहेगा।"[२०] फिर थानेदार को बड़ी घूस मिलती है। और वह वापस चला जाता है।

दूसरे दिन कैंप में झूठा समाचार फैलाया गया कि शुबो

को थानेदार पकड़ ले गया। सुवटी के इग्यारसीलाल तथा हरलो के साथ सम्बन्ध होने के कारण भण्डार की देखभाल सुवटी पर सौंपी जाती है। बछराज के तम्बू में हरलो का आदमी रावता आकर रहने लगा। वहीं तालाब का ठेकेदार बन जाता है। इग्यारसीलाल के आतंक से कैंप के लोग आतंकित हैं। वह जुगनी को शय्या-साथ करने के लिए बुलाता है, मगर अचली उसके महावारी का कारण बताकर खुद इग्यारसीलाल को समर्पित हो जाती है। " इग्यारसीलाल ने काँपते हुए हाथों से अचली को छुआ। वह इग्यारसीलाल के बाहों में ढह गयी। इसी तरह बार-बार ढहते और मरते जीवन निकल गया सारा, अचली ने सोचा। लेकिन - जुगनी को बचाना है इस मूत के कीड़े से। और उसने मूत के कीड़े को कसकर अपने में लपेट लिया। उसके हाथ ..... उसके तमाम अंग यह सब करते-करते मँज गये थें। इग्यारसीलाल चकित रह गया। ऐसा सुख तो .... उसने कभी किसी औरत से नहीं पाया था। उम्र की ढलान पर ढलकते हुए उसके तन में नन्हें-नन्हें अंकुर उग आये और वह बेसुध सा हो गया।"[२१] यहाँपर लेखक ने समाज में फैली गन्दगी के साथ-साथ माँ के वात्सल्य प्रेम को चित्रित किया है।

तालाब की खुदाई जारी है। सूरज की किरणे अपने ताप से लोगों को घायल कर रही हैं। अकाश में धूल का एकाध धब्बा देखकर लोग वर्षा की आशा से अकाश की ओर ताकते रहते हैं। कुछ कैंप टूटने लगे हैं। इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता जरख की झूठी बात कैंप में फैलाते हैं और गोदारी का बेटा बाघिया को मारकर तालाब के किनारे माटी के अन्दर दफना देते हैं। गोदारी अपने बेटे की याद में पागल हो जाती है। दो दिन में कैंप का जीवन आहत और निस्तेज हो जाता है। कुछ भुक्कड़ लोगों ने पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल की पिटाई की। और खाने की चाजे उठा ले गयें। पुष्पाबाई का जान से प्यारा " बक्सा" अपनी जगह पर था।

कैंप टूट चुके हैं। भूक्कड आदमियों की भीड़ जहाँ-तहाँ दिखाई दे रही हैं। भूख के कारण लोग मर रहे हैं। इन लोगों को सोने, चांदी, पैसों से कोई लगाव नहीं, इन्हें तो सिर्फ रोटी चाहिए। सुवटी कैंप के लोगों पर अपना रौब जमाती है। वह सिराम, गज्जी तथा फुलकी को कैंप से बाहर निकाल देती है। सुवटी और रावता का बातों-बातों में झगड़ा हो जाता है। पुष्पाबाई गोदारी का बेहाल करती रहती है। चारो ओर उधम मचा हुआ है। बैसाख और जेठ भी गुजर गया, आषाढ़ निकल आया था। कैंप में सरकार से अनाज आना बन्द हो गया। इसी बीच कैंप में एक अजीब किस्म की बिमारी फैल गयी। बड़ी तादात में लोग मरने लगे। तभी भारत-पाक सीमा पर सीमा सुरक्षा दल के पुलिस हरलो तथा उसकी टोली को पकड़ ले जाती हैं।

* चरमसीमा -

यहाँ से लेखक ने कथा को नया मोड़ दिया है। कथा चरमसीमा की ओर अग्रेसित होती है - हवा रुक गई थी। सूरज दिखाई नहीं दे रहा था। इतने में सिराम के सामने शुबो आकर खड़ा होता है। शुबो के समूचे तन पर काले-काले दाग थें। शुबो पर हरलो और उसके साथिदारों ने बहुत अन्याय-अत्याचार किये थें। हरलो को बी.एस्.एफ. की पुलिस पकड़कर ले गयी। मगर शुबो उनके चंगुल से निकल आया। शुबो की अनुपस्थिति में कैंप में बहुत सा परिवर्तन हो चूका था। लेकिन शुबो के आने से फिर कैंप में रौनक आई। शुबो अपने साथियों से खुद पर गयी बीती सुना देता हैं। धीरे-धीरे कैंप के लोग इकट्ठा होते हैं। बड़ी मात्रा में लोगों की भीड़ को देखकर पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल, रावता, सुवटी अपनी-अपनी जगह पर छुप जाते हैं। वे लोगों की भीड़ को डर जाते है।

वे ताड़ लेते है कि अब शुबो चुप नहीं बैठेगा, हमें होशियार रहना चाहिए। बदरू मियाँ भण्डार की नकली चाबियाँ शुबो को दे देता है। सब लोग भण्डार की ओर जा रहे हैं, इतने में जुगनी ने शुबो के सामने आकर पूछा, " शुबो तुमने मुझे भुला दिया।" तब शुबो की कोमलता उमड़ पड़ती है। वह कहता है - " नहीं, जुगनी।" " तुम्हें याद करते हुए तो मैं रोज मौत से लड़ा हूँ। मुझें नहीं पता था, तुमसे फिर कभी मोलाकात होगी।"[२२] शुबो और जुगनी का अनंत यातनाओं को पाकर फिर से मिलन होता है। हर इन्सान के बड़े होने में कोई प्रेरणा निहित होती है। जुगनी की याद के सहारे शुबो अनेक यातनाओं को सहकर भी जीवित रहता है। जुगनी शुबो पर खुश है। शुबो आगे और लोग उसके पीछे ऐसा सिलसिला जारी है। लोग भण्डार का अनाज लूटकर आगे चलने लगते हैं। बाद में शुबो कई दिन पहले खुद ने गाड़े हुए बोरों के पास लोगों को ले जाता है। बोरें निकालकर लोगों में अनाज बाँट दिया जाता है। शुबो का कहना है कि - " जमीन में दबे रहकर भी इस बाजरे ने मुझे बहोत कुछ दिया है। सबसे पहले मन में जो भरोसा जगा था, वह इस बाजरे के बल पर ही .....।"[२३] यह बाजरे ही उसकी बड़ी ताकत थी।

कैंप मे गाड़ीवान पानी से भरी हुई टंकी लेकर आता है। इग्यारसीलाल, पुष्पाबाई, रावता कैंप छोड़कर भागने की तैयारी करते हैं। इग्यारसीलाल टंकी का पानी रेत में छोड़ देता है ताकि कैंपवालों को पीने के लिए पानी तक न मिले। पहले गाड़ीवान उनके साथ चलने में राजी नहीं होता लेकिन इग्यारसीलाल उसे पैसों का लालच देकर राजी करवाता है। गाड़ी में अपना-अपना सामान लेकर पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल, रावता, बदरू मियाँ, बैठ जाते हैं। उनके पीछे सुवटी भी आना चाहती है तब

रावता अपना पुराना हिसाब पूरा करने के लिए गाड़ी से उतरकर सुवटी को बन्दुक की बट से मारता है, तब तक गाडी आगे निकल जाती है। इग्यारसीलाल के कहने पर पुष्पाबाई रावता पर बन्दूक दाग देती है, रावता भी प्रतिउत्तर में पुष्पाबाई और इग्यारसीलाल को अपने बन्दूक का निशाना बना देता है। इसी तरह अंधकारमय साम्राज्य का अन्त हो जाता है। बन्दूक की आवाज से बैल जोरों से भागने लगते हैं। आगे चलकर गाड़ी रूक जाती है। बदरू मियाँ पुष्पाबाई की लाश को घूरता है। उसका अन्तर्मन कहता है, इसने ही हमें कितने बार जलिल किया था। बदरू के मन में स्थित बदले की आग शान्त हो जाती है।

आकाश में बादल जम गये थें। शुबो तथा अन्य लोग कैंप में आए, देखा तो पुष्पाबाई, रावता, इग्यारसीलाल कैंप से भाग चुके हैं। शुबो ने मन में ही कहा अब यह कैंप भी टूट गया। वर्षा ऋतु आरंभ हुआ। लोग बारिश में भिगने का आनंद ले रहे हैं। सुबह देखा तो आसमान में सुंदर इंद्रधनुष्य दिखाई दे रहा है। लोग रोजी-रोटी की तलाश में निकल पड़े। जुगनी और शुबो भी अन्य लोगों की तरह मार्गस्थ हुए हैं। लाल-लाल बबूरियाँ बालू में रेंग रही थीं। कहीं-कहीं बाजरे के पौधों पर चढते हुए कुंकू की भाँति धूप के चाँधे-चमक रहें थें। रास्ते में जुगनी और शुबो को चक्कल सपेरा मिल जाता है। वे सब भारत-पाकिस्तान सीव पर आ जाते हैं। वहीं एक गाँव को बीच से काट लिया था। वहाँ उन्हें एक औरत मिल जाती है। उसका शरीर अधा -जला हुआ है। जुगनी ने इसके सम्बन्ध में पूछने उसने कहा - " उधर ..... पखोस्तान के एक जम्मेंदार के लोगों ने दुरभिक्ख के कारण मैं रूजगार की खोज में गयी थी वहाँ। जम्मेंदार की बाड़ी में काम करती थी। एक रोज उसकी घारवाली ने मेरी जाँत पूछी। मैंने कहा - भाँबी हूँ। वह बिगड़ गयी

बकने लगी - तूने पहले क्यों नहीं बताया, खसम-खाणी। तूने हमारा धरम भरस्ट कर दिया। जब .... जम्मेंदार को मालूम पड़ा तो उसने अपने चाकरों से बोल दिया, फेंक दो राँड को आग मैं। बस उन्होंने फूस जलाकर मुझे उसमें धकेल दिया। कई बार धकेला और निकाला।"[२४] लेखक ने जाति-पाँति, अंधश्रध्दा तथा जमीनदार द्वारा निम्न लोगों पर किए अन्याय-अत्याचार का चित्रण किया है। शुबो को भारत-पाकिस्तान बँटवारा मंजूर नहीं है। उसकी समझ में अभी तक नहीं आया कि बँटवारा क्यों हुआ। औरत काफी समझदार है। वह शुबो से कहती है - " गरीब का मुलक तो एक ही है, लेकिन जिसको राजपाट चाहिए, हकूमत चाहिए, उसने धड़, और पाँव बाँट लिये है।"[२५]

यहाँ आकर लेखक खामोश हो जाता है। एक सफेद कागज उसे घूरता है। लेकिन भाषा लेखक का साथ छोड़कर मैदान में जाकर खड़ी होती है।

* अंत -

लेखाक ने कथानक का अंत काफी सुझाबूझ के साथ किया है। - जुगनी पसीने से लतपथ माथा पोंछती हुई अपने कार्य में व्यस्त दिखाई देती है। लेखक ने कथावस्तु के अन्त में फ्लैश बैक शैली का इस्तेमाल किया है। शुबो अब इस दुनिया में नहीं है। इस ढाणी को "शुबो की ढाणी" कहते हैं। शुबो और जुगनी ने यहीं सींव पर अपना घर बसाया था। वे भारत-पाकिस्तान के विभाजन को नहीं मानते थे। उन्हें तो विभाजन क्या चीज है यह भी ज्ञात नहीं था। लेकिन उनके घर का विभाजन ऐसा था कि बैठने-उठने का कमरा भारत में और रसोई घर पाकिस्तान में था। एक दिन शुबो सुबह से नाराज था। बांग्लादेश

विभाजन के कारण भारत-पाक के बीच युध्दारंभ हुआ था। शुबो गुस्से में आकर कहता है - " दो तो शशुरे थे ही अब तीसरा और बन रहा है - बंगलादेश। उसी के लिए यह जुध हो रहा है।"[२६] किसी ने हिन्दुस्थान-पाकिस्तान का नाम भी लिया तो शुबो गुस्से में आता था। एक दिन पाकिस्तान के सिपाही उसे बेबात छेडते हैं। तब शुबो उन्हें गालियाँ देता है। सिपाहियों के लिए यह अपमानास्पद था। वे उसे अपने बन्दूक का शिकार बनाते हैं। शुबो तो इस जहान से चला गया, मगर अपनी यादें छोड़कर चला गया। अब इस ढाणी को "शुबो की ढाणी" कहा जाता है। इसका नाम सरकारी कागज-पत्रों में भी दर्ज किया हैं। जुगनी शुबो के आवेश को जानती थी। इसलिए उसके मरनान्त वह उसके विकृत चेहरे को स्नेह से सहलाती हुई कहती है - " तुम्हारा यहीं अन्त होना था शुबो। लेकिन ..... यह अन्त नहीं, शुरुआत है। यह घर वह कुआँ ..... तुम्हारे दुश्मनों से बदला लेंगे और एक रोज अपनी लड़ाई खुद लडेंगे। इन्हें किसी फौज-फाँटे की जरूरत महसूस नहीं होगी।"[२७] लेखाक ने नई पीढ़ी को शुबो के व्यक्तित्व से प्रेरणा प्रदान की है। सालों बाद जुगनी उसी मैदान में तिल के ताड़ सूखा रही है। धूप में खेलते बच्चों को प्यारभरी आँखों से देखाती थी। उन्हें नये तिल खाने देती है, क्योंकि उनमें ताकत आ जाय। "ताकत" इस शब्द का अर्थ जुगनी खूब समझाती थी।

* समीक्षा -

मणि मधुकर कृत " पत्तों की बिरादरी" एक सामाजिक उपन्यास है। यह नवीनतम उपन्यास आज के जीवन के एक ऐसे क्रूर यथार्थ से सम्बन्धित है, जिसने मनुष्य को अपमान और दर्द से भरी गैरमुल्की

जिन्दगी जीने के लिए विवश कर दिया है। पर मनुष्य है कि हिम्मत नहीं हारता। वह बँटवारे की हर साजिश को नकारता हुआ उससे जुड़े रहने का प्रयास करता है। उपन्यास की कथा इसी साजिश के शिकार बने पाकिस्तान के पास राजस्थान के सीमा प्रदेश में रहनेवालें लोगों से सम्बन्धित है। भारत-पाकिस्तान में फैले रेगिस्तान, अकाल, भूखामरी और शोषण की समानता को अलग करने में सरकार कुछ भी कदम उठा नहीं रही हैं। इसी का प्रमाण है पचास-साठ घरों की "शुबो की ढाणी" जो भारत-पाकिस्तान के विभाजन का उपहास करती आज भी सीमारेखा पर खड़ी है। शुबो द्वारा खोदा गया मीठे पानी का कुआँ जिसमें पानी निकालते समय बैले और लोगों को भारत-पाकिस्तान में आना-जाना पड़ता है। शुबो और उसके सहयोगियों ने किसी शासन के आग्रह को नहीं माना। वे लोग न याहया खाँ को जानते थे न जिन्ना को न इन्दिरा गांधी को। शुबो को भारत-पाकिस्तान बँटवारा मंजुर नहीं था। वह पुष्पाबाई से साफ कह देता है - " फालतू का लफड़ा खड़ा मत करो, पुसपाबाई। किसी माँ के यार ने पखेस्तान बना दिया, किसी ने ईदस्तान। सिरफिरे स्साले। उनके बनाने से होता क्या है ? मुझे तो उन्होंने नहीं बनाया ? तुम्हें भी नहीं। सो हमें मुलुकों में बाँटकर अलग करनेवाले वो घसियारे ..... कौन होते है ?"[२८] राजनेताओं पर व्यंग्य करते हुए एक अनपढ़ स्त्री ने भी कहा था - " गरीब का का मुलक तो एक ही है, लेकिन जिसको राजपाट चाहिए, हकूमत चाहिए, उसने धड़ और पाँव बाँट लिये हैं।"[२९]

उपन्यास का प्रारंभ रेत के टीलों के बीच, तिरपाल और छपरे-छाजन से बने एक अकाल-पीड़ित लोगों की सहायता के लिए स्थित कैंप के विवरण से होता है। जहाँपर हिन्दुस्थान और पाकिस्तान का

भेद न जाननेवाले भूखे-प्यासे मजबूर लोग एकत्रा हुए हैं। भीषण अकाल की काली छाया ने देशों की विभाजन रेखा को मिटा दिया है । पाकिस्तान के अकाल पीड़ित (जैसे शुबो) आदि भारतीय राहत कैंपों में चले आये हैं तो भारतीय पीड़ित भी रोजी-रोटी की तलाश में पाकिस्तान की सीमा पर भटक गये हैं। इन कैम्पों में भ्रष्टाचार, शोषण और पीड़न का जैसा घृणित व्यापार चलता है, उसकी कथा बदरू मियाँ, जानकी काकी, सुवटी, फुलकी, शुबो, अचली, बाशिया आदि पात्रों के माध्यम से कही गयी है। शोषणकर्ता है कैम्प चलाने के लिए जिम्मेदार पुष्पाबाई, इग्यारसीलाल और रावता जैसे लोग जो राजनेताओं का सहारा पाकर समाजसेवा की ओट में अपनी मनमानी करते है। लोगों पर अन्याय-अत्याचार करते हैं। इन लोगों ने शोषण पीड़न के लिए एक पूरी समाज व्यवस्था का निर्मान किया है। इनका अपना एक गुट है। ये तस्करी में ही सहायता नही करते अकाल-पीड़ितों को कैंम्प में बाँटने के लिए मिलनेवाला अनाज भी बेच देते हैं भाले ही कैम्पवासी भूखे मरें। झूठे कागजात भरे जाते है, जिनमें पचास-साठ लोगों की जगह दो सौ से भी अधिक लोग दिखाकर पैसा कमाया जाता हैं। इससे वे ऐय्याशी करते रहते हैं।

यह कथ्य इसलिए ही महत्वपूर्ण नहीं है कि यह कैम्पों में चलनेवाले घृणित व्यापारों की मार्मिक गाथा प्रस्तुत करता है बल्कि इस कारण भी कि जागृत और साहसी लोगों के विरोध के परिप्रेक्ष्य में उन आततताइयों की पराजय की अनिवार्यता की ओर भी संकेत करना है और इस प्रकार शोषण लोग विरूध्द संघर्ष की सार्थकता प्रमाणित करता है।

कथा की इस विशिष्ट प्रकृति ने पात्रों को भी दो स्पष्ट वर्गों में बाँट दिया है जिन्हें उनके क्रियाकलापों द्वारा भली-भाँति पहचाना जा सकता है। ये वर्ग हैं शोषक और शोषित। शोषक वर्ग का प्रमुख पात्र है पुष्पाबाई, एक वेश्या की महत्वाकांक्षी पुत्री जो राज-नेताओं के सहयोग से "अम्मी", "एम्मेले" बनने का स्वप्न देख रही है परन्तु क्रूरता और विलासिता में केवल प्राचीन बर्बर शासकों का अनुकरण कर पाती है। उसका अपना पूरा गुट है जो सारे कैम्प को आतंकित किये रहता है। शोषित वर्ग का प्रमुख पात्र है शुबो जो पाकिस्तान से भागकर इस भारतीय कैम्प में आया है। उसमें साहस है, आक्रोश है और अधिकार छीन लेने की ललक है। रेगिस्तान के अमर चारण अजैदान की कविता उसकी प्रेरणा स्त्रोत है और वह स्वयं उसका अवतार बना अपने साथियों का प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान करता रहता है। उसकी हत्या के बाद उसकी पत्नी जुगनी विश्वास और आशा की वही ज्योति जलाये रखती है - " यह अन्त नहीं शुरूआत है। यह घर, यह कुर्बा तुम्हारे दुश्मन से बदला लेगा। इन्हें किसी फौजफाटे की जरूरत महसूस नहीं होगी।"[30]

विजय और पराजय के छोरों को छूती उपन्यास की कथा मजबूर आदमियों की अनोखी पीड़ा में डूबी हुई है। अकाल की भीषण छाया के परिप्रेक्ष्य में रेतीले परिवेश और समस्याग्रस्त जीवन की यह झाँकी अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। यह सहज है क्योंकि उपन्यासकार ने अपनी यात्राओं द्वारा प्राप्त अनुभवों को अनुभूति की गहराई प्रदान कर कथा में उतार दिया है। लेखक ने बंगाल, मिजोरम की यात्राएँ की थी। उपन्यास की भाषा पर भी लेखक का अधिकार है। विवरणों और वर्णनों में स्थानीय रंग जितना गहरा है उतना ही गहन उसका भाषा पर प्रभाव भी है। लोकरूप लिए शब्द भाषा को प्रवाहपूर्ण ही नहीं प्रभावपूर्ण भी बना देते

हैं इसलिए ऐसे शब्द हम अधिक सार्थक लगते हैं - पखेस्तान (पाकिस्तान) हिंदस्तान (हिन्दुस्तान), सुपारत (सिफारिश), व्यान (ध्यान), तिरपन (तृप्त), बेस्स (बी.एस.एफ), अम्पी (एम.पी) आदि।

लेखक ने उपन्यास में अनेक समस्याओं को उद्घाटित किया है। इसमें राजस्थानी जनजीवन पर प्रकाश डालना उनका प्रथम उद्देश्य रहा है। भारत-पाकिस्तान बँटवारा, राजनीतिक अव्यवस्था, स्त्री-पुरुषों के अन्तर्बाह्य सम्बन्धों को परखना तथा अकाल पीड़ितों का चित्रण करना उनका उद्देश्य रहा है।

उपन्यास का अन्त चरमसीमा के अन्त में दिखाया है। शुबो थोड़ी-थोड़ी बात पर आवेशित हो जाता है। उसे भारत-पाकिस्तान बँटवारा मंजूर नहीं है। एक दिन कुँए पर पाकिस्तान के सिपाही उसे बेबात छेड़ते हैं, तब वह उन्हें गालियाँ देता है। सिपाहियों के लिए यह अपमान असहनीय था। वे उसे अपने बन्दूक का शिकार बनाते हैं। अन्त में जुगनी परिश्रम करते, तिल के ताड़ सुखाती दिखाई देती है। वह जानती थी कि तिल खाने से ताकत आ जाती है। यहाँपर कथानक समाप्त हो जाता है।

उपन्यासकार ने नयी पीढ़ी के सामने शुबो के रूप में एक आदर्श रखा है। वे बताना चाहते हैं कि रोजी-रोटी के लिए इन्सान को कितना झगड़ना पड़ता है। पाठक उपन्यास के अन्त तक जिज्ञासावश रहता है। उपन्यास पढ़ने के बाद पाठक को लगता है कि शुबो के अन्त के बजाय, शुबो और जुगनी का सुखी परिवार दिखाना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। फिर भी उपन्यास प्रशंसा का पात्र है।

उपन्यास का शीर्षक प्रतीकात्मक है। प्रतीक अज्ञेदान चारण की कविता से लिया गया है, जिसे उपन्यासकार ने अपनी तरह से फलित-पुष्पित किया है। "दरख्त एक ढाणी है, एक गाँव है और पत्ते उसके बाशिन्दे होते हैं। लेकिन ऋतुओं की मार से जब पेड़ उजड़ने लगता है तो पत्ते सूख-सूखकर गिरने और बिखरने लगते हैं। अपने गाँव-घर छोड़कर, दु:ख-दैन्य के बोझ को ढोते हुए, वे पत्ते ..... जाने कहाँ - कहाँ तक रेलों में बहते-उड़ते चले जाते हैं। ..... यही है पत्तों की अपनी बिरादरी।"[३१] उपन्यास में पत्तों की यह बिरादरी गैरमुलकी जिन्दगी जी रहे उन बिखरे मनुष्यों की है जो अपमान के अहसास के साथ निरन्तर दु:ख झेलते अपनी जड़ों का हक हासिल करने की कामना में भटक रहे हैं। बात केवल भारत और पाकिस्तान के बीच भटकने वालों की नहीं है, यदि व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो इसमें उस भीषण अन्तराष्ट्रीय संकट की ओर संकेत दिखाई देगा, जिससे ग्रस्त एक विशाल मानव समुदाय गैरमुलकी बना शरण ढूँढता घूम रहा है। इस प्रकार एक बिलकुल नवीन विषय पर लिखे गये इस उपन्यास ने अनुभूति की प्रमाणिकता, कथ्य की सहजता, निर्माण की कुशलता और प्रकृति की विशिष्टता के कारण हिन्दी उपन्यासों में अपनी अलग पहचान बना ली है।

* निष्कर्ष -

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि "पत्तों की बिरादरी" एक सामाजिक उपन्यास है। इसमें अकाल-पीड़ित रोजी-रोटी की तलाश में भटकते विवश लोगों का चित्रण के साथ-साथ भारत-पाकिस्तान बँटवारे के कारण शुबो जैसे गैरमुलकी लोगों पर किए गये अन्याय-अत्याचार का भी वर्णन किया है। पूरी कथा नायक शुबो के इर्द-गीर्द मंडराती है। शुबो तथा जुगनी की मुख्य कथा है। इस मुख्य कथा को पुष्टि देने के लिए अनेक सहायक कथाओं का अन्तर्भाव प्रस्तुत उपन्यास में किया है। उनमें है पुष्पाबाई की कथा, इग्यारसीलाल की कथा, रावता की कथा, सुवटी की कथा, बाशिया की कथा, हरलो की कथा। कथानक में सहजता एवं रोचकता होने के कारण पाठक उपन्यास जिज्ञासावश पढ़ता चला जाता है। लेखक ने भ्रष्टाचार, अंधश्रध्दा, राजनीतिक अव्यवस्था, बँटवारा, अकाल जैसी समस्याओं को चित्रित किया है। उपन्यास के नामकरण में प्रतिकात्मकता है। वह कवि अजैदान की कविता से प्रेरणा पाकर किया है। कुछ पात्र कवि अर्जैदान से प्रेरित हैं। जगह-जगह पर यथोचित राजस्थानी हिन्दी का प्रयोग किया है। इन सभी कारणों से उपन्यास की कथावस्तु अत्यंत सुंदर, प्रभावशाली, कौतुहल वर्धक एवं रोचक बन पड़ी है।

द्वितीय अध्याय

"पत्तों की बिरादरी" की कथावस्तु का अनुशीलन।"

१. डा. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज -"पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दान्त" पृ.३७९

२. डा. भगीरथ मिश्र - "काव्यशास्त्र" पृ. ७७

३. मणि मधुकर -"पत्तों की बिरादरी" पृ. प्रथम कव्हर पृष्ठ

४. वहीं पृ. ९

५. वहीं पृ. १२

६. वहीं पृ. १४

७. वहीं पृ. २५ व २६

८. वहीं पृ. ३०

९. वहीं पृ. ४७

१०. वहीं पृ. ५८

११. वहीं पृ. ६२

१२. वहीं पृ. ६३

१३. वहीं पृ. ७६

१४. वहीं पृ. ७९

१५. वहीं पृ. ८०

१६. वहीं पृ. ८३

१७. वहीं पृ. ८४

१८. वहीं पृ. ९५

१९. वहीं पृ. ११०

२०.	मणि मधुकर	-"पत्तों की बिरादरी"	पृ. ११२
२१.	वहीं		पृ. ११९
२२.	वहीं		पृ. १४९
२३.	वहीं		पृ. १५१
२४.	वहीं		पृ. १६२, १६३
२५.	वहीं		पृ. १६७
२६.	वहीं		पृ. १६७
२७.	वहीं		पृ. १६८
२८.	वहीं		पृ. ६२
२९.	वहीं		पृ. १६३
३०.	वहीं		पृ. १६८
३१.	वहीं		पृ. २५